

२५-७-५१

(१)

एक सेठ को दुपहर के खेले में नींद आती है और वह  
 सोने लगता है। सोने में भी गप्पी लगाती है और  
 पसीने से तर-बतर हो जाता है। सोने में लगा, मलो लठे  
 और ताकत बैठ कर गंगा की लहरों की ठंडी हवा लेता है,  
 जो उसे सोने लगा, तो लेहती सोती, पं भी साथ  
 चलती है, रुक भी गप्पी लगाती है। सोने में  
 सोने के पंजाब कोल बन्दों में भी गप्पी लगाती  
 करती है, और सबको साथ लेता तोय या बैठ  
 कर गंगा की ठंडी लहरों का आनंद लेता है।  
 तोय चलते-चलते ही चपाकी एक गप्पी भंडी पैदा  
 होती, ताकत कोला, अकरो वेशा की बाल लगी है  
 मंडली, आप की आप जानते, पं तो सुंदर आपकी  
 जान बचारा है। लेहती लठके साथ, पं तो सुंदर  
 है, गिड़गिड़ते हैं, मलक धुतले हैं, पं तो सुंदर  
 है, मि सोविक तोय खेले का मल दिया  
 और गप्पी तो का डकने लगी है, बचो, लगी  
 रोटि माली रो लेते, बेचारे धवड़ा रहे  
 हैं, लाम लीय का लेते हैं, पं तो सुंदर लाम लीय  
 नहीं आया है कि मया फल?

उत्ते, लठ जाग जाय, तो सोने दुपहर का  
 मं दू हो जाय? जो अपन लठके लठके  
 लठके हैं, लठ भी लठके लठके लठके  
 लठके हैं

— ० —

1. शिवजी का प्रथम नाम 'शिव' है। शिवजी का दूसरा नाम 'शंकर' है। शिवजी का तीसरा नाम 'शंभु' है। शिवजी का चौथा नाम 'शंभू' है। शिवजी का पांचवां नाम 'शंभु' है। शिवजी का छठवां नाम 'शंभू' है। शिवजी का सातवां नाम 'शंभु' है। शिवजी का आठवां नाम 'शंभू' है। शिवजी का नौवां नाम 'शंभु' है। शिवजी का दसवां नाम 'शंभू' है।

शिवजी एक देवता हैं। शिवजी का नाम 'शिव' है। शिवजी का दूसरा नाम 'शंकर' है। शिवजी का तीसरा नाम 'शंभु' है। शिवजी का चौथा नाम 'शंभू' है। शिवजी का पांचवां नाम 'शंभु' है। शिवजी का छठवां नाम 'शंभू' है। शिवजी का सातवां नाम 'शंभु' है। शिवजी का आठवां नाम 'शंभू' है। शिवजी का नौवां नाम 'शंभु' है। शिवजी का दसवां नाम 'शंभू' है।



राजा जनक ने पास जाकर किसी बृद्ध विद्वान्  
 से कहा कि तुम लक्ष्मी आदि में मोह कैसे करते  
 हैं तुम धोड़ले ही नहीं हैं; कि मैं क्या करूं ?  
 जनक ने उसे काय उत्तर देकर उसे उठा दिया कि  
 एक लंकेको दंतों एक पैदा की त्रिपदायिका  
 वा मोहिं चालिका तथा त्रिपदायिका को  
 उसे सोय तुम सुडाओ - वह उगाएक बोला  
 मठा एम, आप बड़े काम काजस पडते हैं जो  
 एक लो लंके को पकडे हैं और त्रिपदायिका  
 है कि लंके की पकड लिमा १ जनक को लंके  
 मरमज मंथा, यदि लंके में तुम नहीं पकड  
 है, तो लक्ष्मी सुमोने लुके ही नहीं पकडा  
 बराओ, वे लुके ही नहीं लिपटे हुए ही लुके  
 अपने मोहके काण उतरे किपटे हुए ही  
 यदि मोह काण लुके ही उतरे मोह धोड  
 तो लुके ही लिपटे ही संकटे ही  
 लंका की जीव, लक्ष्मी सुदकादि  
 मोह काके संभालना ही और लुके ही  
 कि सुदुवी जस लुके ही लंके लुके

एक दिन एक दिन, मकान बनाना और (सुनना)  
 उद्योग-संगठन किया। लकापसमें ऊपर लगे  
 से दूसरे लगे कि बलाउते इतने धिया सभी  
 एक महीने 9 महीने को सभी एक महीने को  
 ही की त इतनी करेगे। एक लकापसमें इतना  
 मार दूं। एक बाली, तेरही एत मकान में  
 दो बड़ी लोभी एक महीने 9 महीने को  
 बलाउते में उनी ठीक मार देता हूं 9 मही  
 नों का, एक ही महीने में कि यह मकान सदा  
 स्थायी रहे वाला नहीं रहे, एक न एक दिन  
 मि जायेगा - और दूसरी महीने की  
 कि इतना बनवाने मालामी इतने सदा  
 रहती लकवा, यह भी एक दिन मकान  
 चला जायगा। दो दोनों लोभियों की  
 ठीक मार सके दो दो महीने। निरामी  
 लोभों की मकान का मार दिखे मकान में  
 एक महीने 9  
 एक दुनियां के सब काम सारे हैं, यह  
 दुनिया महीने कि त एक स्थायी है मार  
 न लोभों का वि